

बौद्ध धर्म में विभाजन का कारण बताएं —

भूमिका :

गौतम बुद्ध के निर्वाण (लगभग 483 ई.पू.) के बाद बौद्ध संघ के अनुयायियों में धर्म, अनुशासन और साधना की व्याख्या को लेकर मतभेद उत्पन्न हो गए। समय के साथ ये मतभेद इतने बढ़े कि बौद्ध संघ कई शाखाओं में विभाजित हो गया। यह विभाजन doctrinal (सिद्धांतगत) और disciplinary (अनुशासनगत) दोनों ही कारणों से हुआ।

---

१. विभाजन के प्रमुख कारण

(क) अनुशासन संबंधी मतभेद (Vinaya Disputes):

प्रारंभिक काल में कुछ भिक्षु संघ के कठोर नियमों को शिथिल करना चाहते थे, जबकि दूसरे उनके सख्त पालन के पक्षधर थे।

इसी विवाद के चलते पहला बड़ा विभाजन हुआ —

एक समूह स्थविरवादी (Sthaviravāda) कहलाया, जो पुरानी परंपरा का समर्थन करता था।

दूसरा समूह महासांघिक (Mahāsāṃghika) कहलाया, जो नियमों में लचीलापन चाहता था।

---

(ख) सिद्धांतगत मतभेद (Doctrinal Differences):

बुद्ध की प्रकृति, बोधिसत्व की भूमिका, और निर्वाण की व्याख्या पर मतभेद उत्पन्न हुए।

कुछ अनुयायी बुद्ध को “महान शिक्षक” मानते थे (हीनयान विचार), जबकि अन्य उन्हें “ईश्वरीय सत्ता” के रूप में पूजने लगे (महायान विचार)।

---

(ग) भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विस्तार:

विभिन्न क्षेत्रों में बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ स्थानीय परंपराओं और भाषाओं का प्रभाव बढ़ा, जिससे विचारों में विविधता आई।

उदाहरणतः उत्तर भारत में महायान और दक्षिण भारत तथा श्रीलंका में हीनयान (थेरवाद) प्रमुख हुआ।

---

(घ) राजनीतिक एवं संरचनात्मक कारण:

विभिन्न राजाओं ने अपने-अपने साम्राज्यों में अलग-अलग बौद्ध संप्रदायों को संरक्षण दिया।

मौर्य और कुषाण काल में बौद्ध धर्म का प्रशासनिक रूप से भी विभाजन स्पष्ट हुआ।

---

२. विभाजन के परिणाम

1. बौद्ध धर्म दो प्रमुख शाखाओं में बँट गया —

हीनयान (Theravāda)

महायान (Mahayāna)

2. बाद में वज्रयान जैसी शाखा भी विकसित हुई।

3. विचारों की विविधता से बौद्ध धर्म लचीला और व्यापक बना, किंतु भारत में उसका प्रभाव धीरे-धीरे कम होता गया।

---

निष्कर्ष :

बौद्ध धर्म में विभाजन के मूल में धार्मिक अनुशासन और दार्शनिक मतभेद थे। यद्यपि इन विभाजनों ने संघ की एकता को प्रभावित किया, फिर भी उन्होंने बौद्ध धर्म को विविध संस्कृतियों में ढलने और अंतरराष्ट्रीय स्वरूप पाने में सहायता दी।